श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ४

जुलाई - २०

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना: १. नाम और एन्रोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. गुरु भगवंत जो..... दे वो स्वीकार कर श्रद्धापूर्वक पूर्ण करने का है।
२. तेजोलेश्या अथवा शीतलेश्या का प्रयोग करते समय..... लब्धिवाला जीव अपने आत्मप्रदेशो को शरीर के बाहर निकलाता है।
३. ..... सूत्र जिनबिंब की प्रतिष्ठा, रथयात्रा तथा स्नात्र के अंत में बोला जाता है।
४. इसी तरह..... तीर्थ के सेवन से क्रोधरुप गरमी शांत होती है।
५. सब जीवो को वेदना..... और मरण समुध्दात हो सकते है।
६. उपर..... भगवंत स्वाध्याय कर रहे थे।
७. ..... एक जिनशासन का सार एवं अर्करुप ग्रंथ है।
८. केवली समुद्घात से नाम, गोत्र, वेदनीय कर्म का ..... करणद्वारा बहुत विनाश होता है।
९. पांच प्रकार के आचार को जानते हो वो.....कहलाते है।
१०. दिगंबर परम्परा श्रीउमास्वातिजी को..... समान मानती है।
११. लोगो को दिखाने के लिये छोटे दोषो की आलोचना ले पर बडे दोषो की आलोचना नहीं ले वो..... है।
१२. .....निश्चय और व्यवहारयुक्त है।
१३. कर्मक्षय की क्रिया में यह..... की क्रिया सहायक बनती है।
१४. विद्यापीठ में से निकलकर..... गुरु के नगर की ओर भाग निकले।
१५. आज का दिन पवित्र है, यह अवसर..... है।
१६. ..... में से चिंतन को दूर कर मन में संपूर्ण विद्यारुपी अमृत को भरता है।
१७. ..... समुद्घात में जीव मोहनीय कर्म के बहुत सारे कर्मपुद्गलो की उदीरणा करता है।
१८. ..... राजमान्य पुरोहित होने से अहंकारी थे।
१९. विश्व का एक भी विषय ऐसा नहीं है जिसकी..... में स्पर्शना न हुई हो।
२०..... मेल के दूर होने से आत्मा की शुद्धि होती है। १५

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -

१. अनेक पापो से आत्मा को मुक्त करने के लिये क्या करना चाहिये ?
२. सात समुद्घात की क्रिया कौन कर सकता है ?
३. जन्माभिषेक करने के पश्चात शांति की उद्घोषणा कौन करता है ?
४. तत्वार्थसूत्र के आठवें अध्याय में किसका निरुपण किया है ?
५. योगसूत्र के रचयिता कौन है ?
६. जहां लोभ का सूक्ष्म अंश है, वो कौनसा गुणस्थान कहलाता है ?
७. आलोचना का मार्ग स्वीकार कर अनेक आत्माओ ने क्या प्राप्त किया है ?
८. कौनसे धर्मध्यान में आंशिक रुप से शुक्ल ध्यान है ?
९. जब अघाती कर्मो की स्थिति समान नहीं हो तब जीव उसे समान करने कौनसा समुद्घात करता है ?
१०. परमहंस की रक्षा किसने की ?
११. तत्वार्थसूत्र की सबसे बडी टीका किसकी है ?
१२. त्रिलोक में उद्योत करनेवाले कौन है ?
१३. दंडक प्रकरण कौनसे मुनि ने लिखा है ?
१४. कषाय क्या सेवन करने से बढते है ?
१५. संसार से हारे और थके हुओ का विश्रामस्थल कौन है ? १०

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -

१) वः २) समेत्य ३) समुग्घाया ४) त्यागा ५) हीन ६) गोयम ७) माहरवं ८) वेय ९) अहन् १०) विज्ञाय ११) निज्जरेइ १२) विधाय १३) महिताः १४) सन्नीणं १५) यावत् १६) सत् १७) निशम्यतां १८) नामान् १९) पकुव्वीय २०) अनुमाण

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) वैयावच्च	१) मूल	६) शुक्लध्यान	६) आरंभिक
२) चौदह पूर्वधर	२) रुपातित धर्मध्यान	७) सद्ध्यान	७) आकंप
३) विद्यागुरु	३) वृद्धशांति	८) दीक्षागुरु	८) आयुष्यकर्म
४) जंबूलता	४) घोषनंदि	९) नंदिषेण)	९) आहारक समुद्घात
५) मरण समुद्घात	५) अजित शांति स्तव	१०) शांतिसूरि	१०) श्रीहरिदेव

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. श्रीजिनभद्रजी ने कितने शिष्यो को पू. हरिभद्र के कषाय को उपशांत करने भेजा ।
२. धर्मध्यान की भावना कितनी है ?
३. कितने प्रकार के गुणो के धारक आचार्य के पास आलोचना लेनी चाहिये ?
४. सरस्वती देवी कितने स्वरुपवाली होती है ।
५. कर्मतत्व का निरुपण करने वाले अध्याय में कितने सूत्र है ?
६. अत्यन्त विशाल विद्यापीठ में कितने अध्यापक थे ?
७. आलोचनाचार्य कितने प्रकार के ज्ञान वगैरह आचार वाले होते है ?
८. सूक्ष्मसंपराय गुणस्थान पर मोहनीयकर्म की कितनी प्रकृति शांत अथवा क्षीण होती है ?
९. गर्भज तिर्यंच को कितने समुद्घात होते है ?
१०. षडदर्शन समुच्चय में कितने दर्शन की विशेष समझ दी गयी है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. योगसूत्र की रचना श्रीहरिभद्रसूरि ने की है ।
२. छेदग्रंथो के रहस्यो से अंजान गुरु के पास से आलोचना ले तो वो अव्यक्त दोष है ।
३. विश्व का स्वरुप समझा हुआ खगोलशास्त्र है ।
४. पवन आसन इन्द्रिय, मन, क्षुधा, निद्रा को जीतता है ।
५. सारे जीवो को वेदना, कषाय, मरण और वैक्रिय समुद्घात हो सकता है ।
६. श्रीहरिभद्र जाति से ब्राह्मण और कर्म से पुरोहित थे ।
७. चौथे समय में १४ अवकाश पूरा कर संपूर्ण ४ राजलोक में आत्मप्रदेशो को विस्तारित करता है ।
८. पांच प्रकार के आचार को जानता हो वो आचारवान कहलाता है ।
९. साध्वीजी श्रावक को शिष्य बनाते है ।
१०. कषाय समुद्घात में नये कर्म बंधते है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. सात समुद्घात की क्रिया केवल संज्ञी मनुष्य ही कर सकते है ।
२. वे जिनेश्वरो जय पाओ, सानिध्य करने वाले हो ।
३. निश्चिय और व्यवहार दोनो को जीवन में स्थान देना चाहिये ।
४. जीवन में ऐसे दोषो का सेवन न हो इसके लिये सावधान बनने का है ।
५. केवली समुद्घात केवली भगवंतो को चार अघाती कर्मो की स्थिति समान नहीं होती तब होता है ।
६. उनके ज्ञान और विद्वता की प्रशंसा करने में आयी है ।
७. पाप (दोष) दूर होने से प्रमोद उत्पन्न होता है ।
८. संपराय यानि कषाय, जहां सूक्ष्म कषाय है वो सूक्ष्म संपराय ।
९. रे मोह ! तेरी गति न्यारी है..... ।
१०. एक बार इस संक्षिप्त नोट के पन्ने उडकर अन्य भिक्षु के हाथ में आये ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. तीर्थकरों का जन्म महोत्सव, वृहद्शांति के आधार पर समझाइये । २) आलोचना के कोई भी तीन दोष समझाइये ।
३. अप्रमत गुणस्थान समझाइये । ४) तैजस समुद्घात के बारे में बताइये ।
५. उमास्वातिजी के तत्वार्थसूत्र का परिचय कराइये ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com